भारत-चीन संबंधो में दरार

साभार : इंडियन एक्सप्रेस | 17 अगस्त, 2017

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) के लिए महत्वपूर्ण है।

दिल्ली की आर्थिक ताकत बीजिंग से मेल नहीं खा पा रही है और साथ ही चीन के नेता की नेपाल यात्रा भारत के असफल सॉफ्ट पॉवर का एक और उदाहरण पेश करती है।

चीनी वाइस-प्रीमियर वाँग यांग ने मंगलवार को नेपाल के अपने तीन दिवसीय दौरे में बाढ़ से प्रभावित देशों की मदद के लिए 1 मिलियन डॉलर के पैकेज देने की घोषणा की है। कुछ दिन पहले, भारत के विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए नेपाल में सभी तरह की मदद करने का आश्वासन दिया था, जिसमें 100 से अधिक लोगों को इसका लाभ दिया जा चुका है। लेकिन नेपाल में चीन की चेकबुक कूटनीति ने एक बार फिर से भारत को नेपाल के समक्ष छोटा बना दिया है। चीन ने अपनी सॉफ्ट पॉवर नीति को आजमाने के लिए वांग की यात्रा का अच्छे से इस्तेमाल किया है। मंगलवार को, चीनी उपाध्यक्ष ने काठमांडू के हनुमान धोक दरबार स्क्वायर में ऐतिहासिक नौ मंजिला महल के पुनर्निर्माण का उद्घाटन किया, जो दो साल पहले एक विनाशकारी भूकंप में क्षतिग्रस्त हो गया था, जहाँ चीन इस विश्व विरासत स्थल के पुनर्निर्माण के लिए पूरी निधि प्रदान करेगा। इसके विपरीत, अगर इस सन्दर्भ में भारत की बात की जाये तो वर्ष 2015 के भूकंप में नष्ट ऐतिहासिक स्थलों के पुनर्निर्माण के प्रयासों में भारत ने अपनी न्यूनतम उपस्थिति दर्शाई थी।

देखा जाये तो दोनों देश भारत और चीन ने दशकों से नेपाल पर अपना प्रभाव डालने के लिए आपस में लड़ते आये हैं, और इसलिए यहाँ भूकंप एक मात्र प्राकृतिक आपदा नहीं लगती है, बल्कि इसे तीनो देशों के बीच संबंधों में एक महत्वपूर्ण क्षण के रूप में देखा जाता है। इस आपदा के बाद, नेपाल ने अपने दो बड़े पड़ोसियों को अपनी अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए दिये थे। लेकिन नेपाल में इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के प्रति भारत की 340 मिलियन डॉलर की प्रतिबद्धता को चीन के नेपाल में सड़क और जल विद्युत परियोजनाओं के लिए 8.3 अरब डॉलर के निवेश ने बौना साबित कर दिया है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत चीन की आर्थिक ताकत से मेल नहीं खा पा रहा है, नई दिल्ली को काठमांडू के संबंध में गंभीर रूप से विचार करना चाहिए, ताकि नेपाल बीजिंग के तकनीकी विशेषज्ञता अर्थात ऊर्जा निर्माण सुविधाएं और विरासत भवनों की बहाली के रूप में भारत का साथ न छोड़ दे। वांग की यात्रा के दौरान, दोनों देशों ने हिमालयी देश में प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम का पता लगाने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन करने के लिए एक समझौते पर भी हस्ताक्षर किया है। चीन ने नेपाल सरकार से अपील की कि उनकी सरकार सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाए ताकि वह 114 किलोमीटर की अरानिको राजमार्ग को दोबारा खोलने में मदद कर सके, जो कि दोनों देशों से जुड़ा एक पुराना मार्ग है, जिसे वर्ष 2015 के भूकंप के बाद क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण बंद कर दिया गया था।

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में इस टॉपिक से पूछे गए प्रश्न

1. दक्षिण चीन सागर के मामले में, समुद्री भू-भागीय विवाद और बढ़ता हुआ तनाव समस्त क्षेत्र में नौपरिवहन की और ऊपरी उड़ान की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिये समुद्री सुरक्षा की आवश्यकता की अभिपुष्टि करते हैं। इस संदर्भ में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा कीजिये। (2014)
2. 'मोतियों के हार' (द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स) से आप क्या समझते है? यह भारत को किस प्रकार प्रभावित करता है? इसका सामना करने के लिये भारत द्वारा उठाए गए कदमों की संक्षिप्त रूपरेखा दीजिए। (2013)

इन संकेतों को काठमांडू से जोड़ कर देखना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि भूकंप के कुछ महीनों बाद ही भारत का रवैया मधेशी आंदोलन के दौरान नेपाल के प्रति काफी दबंग भरा रहा था, जिसका विरोध उस वक्त नेपाल ने किया भी था। हालांकि, नई दिल्ली ने नेपाल के आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि मधेशियों द्वारा राजमार्ग पर किये गए नाकाबंदी में भारत का कोई हाथ नही था, लेकिन भारत इस लोकप्रिय धारणा को बदलने में सफल नहीं हो सका और भारत को नाकाबंदी के बाद हुई जरूरी वस्तुओं की गंभीर कमी के लिए हमेशा जिम्मेदार माना गया। वांग की यात्रा नेपाल के मित्र होने की जरूरत को समेकित करेगी। नई दिल्ली की सॉफ्ट पॉवर नीति में यह असफलता निश्चित रूप से नीति निर्माताओं के लिए चिंता का विषय होना चाहिए, क्योंकि भारत नेपाल में चीन की तुलना में आर्थिक दृष्टिकोण से पिछड़ता जा रहा है।

भारत-नेपाल मैत्री संधि

अनेक कूटनीतिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप 1950 में भारत और नेपाल के मध्य मैत्री संधि हुई।

संधि के प्रावधान

- दोनों देशों ने एक-दूसरे की सुरक्षा की गारंटी ली।
- एक-दूसरे के विरूद्ध विदेशी आक्रमण को सहन नहीं करेंगे।
- नेपाल अपनी युद्ध सामग्री भारत से खरीदेगा।
- यदि नेपाल युद्ध सामग्री किसी अन्य देश से खरीदता है तो वह भारत से होकर जायेगी।
- अन्य देश के कारण उत्पन्न समस्या पर एक-दूसरे से विचार करेंगे।

मधेशी समस्या

मधेशी का अभिप्राय

- नेपाल में पहाड़ी और तराई क्षेत्रों के मध्य क्षेत्र को ही मधेशी क्षेत्र कहा गया, जो नेपाल के पहाड़ी और मैदानी भाग के बीच का भाग है। इस मधेशी क्षेत्र में नेपाल के 22 जिले सम्मिलित है, जिनके जनपद की सीमा भारत की सीमा के साथ मिलती है।
- मधेशियों में भारतीय मूल के मधेशी हैं और नेपाली मधेशी भी है। नेपाल की जनसंख्या का लगभग 40% से ज्यादा हिस्सा इस भाग में निवास करता है। नेपाल के कृषि उत्पादन का 65% तथा नेपाल के कुल राजस्व का 70% भाग इसी क्षेत्र से प्राप्त होता है।
- मधेशी, मैथिली, भोजपुरी एवं हिन्दी भाषा बोलते हैं। इसलिए इनके सांस्कृतिक और वैवाहिक संबंध भारतीयों से हैं।

मधेशियों के साथ नेपाल में भेदभाव

- मधेशियों के साथ अनेक प्रकार के भेदभाव हुए। उदाहरण के लिए, वर्ष-1964 के नागरिकता अधिनियम के अनुसार मधेशियों को नागरिकता के सर्टिफिकेट से वंचित कर दिया गया, जिससे उन्हें नेपाल में भूमि खरीदने के अधिकार से भी वंचित होना पड़ा।
- मधेशियों के अनुसार, मधेशी क्षेत्र का विकास नेपाल के पहाड़ी क्षेत्र की तुलना में अत्यधिक कम हुआ है।
- मधेशी ये भी मानते हैं, कि भारत का दृष्टिकोण सदैव काठमांडू केन्द्रित होता है और भारत भी मधेशियों के हितों की उपेक्षा करता है।

नेपाल सरकार का मधेशियों के बारे में दृष्टिकोण

- नेपाल सरकार मधेशियों को भारत समर्थक मानती है।
- माओवादियों और मधेशियों के बीच भी हिंसक संघर्ष हो चुके हैं।
- माओवादियों ने आरोप लगाया कि मधेशियों को भारत उकसाता है।

नेपाल और चीन की नजदीकी से भारत का नुकसान

- नेपाल अपना 60% आयात भारत के जरिये पूरा करता है। चीन के साथ समझौते से भारतीय बंदरगाहों पर नेपाल की निर्भरता खत्म हो जाएगी।
- हिमालय जो कि नेपाल और चीन के संपर्क में एक बाधक बना था, अब दोनों देशों को जोड़ने वाला बन गया है।
- ट्रांजिट एंड ट्रेड समझौता दक्षिण एशिया में नए समीकरण का सूत्रपात करेगा। चीन का नेपाल में प्रवेश भारत को घेरने की उसकी योजना का हिस्सा है।
- चीन द्वारा नेपाल में इंफ्रास्ट्रक्चर विकास की योजना भारतीय सीमाओं तक चीनी सैनिकों की पहुंच सुनिश्चित करेगी।
- नेपाल-चीन के बीच रेल संपर्क की बहाली सिलिगुड़ी कॉरिडोर पर खतरा बढ़ाएगी। यही एक मात्र कॉरिडोर है जो पूर्वोत्तर को भारत से जोड़ता है।
- नेपाल में चीन की मौजूदगी का अर्थ है कि भारत के अलगाववादियों और माओवादियों तक उसकी पहुंच बढ़ जाएगी।
- साथ ही भारत-नेपाल सीमा पर सुरक्षा संबंधी दूसरी समस्याएं पैदा होंगी।

भारत और चीन के बीच विवाद के सबसे अहम कारण

1. **तिब्बत :** भारत व चीन के बीच तिब्बत, राजनीतिक व भौगोलिक तौर पर बफर का काम करता था। चीन ने 1950 में इसे हटा दिया। भारत तिब्बत को मान्यता दे चुका है, लेकिन तिब्बती शरणार्थियों के बहाने चीन इस मसले पर यदा-कदा नाक भौं सिकोड़ता रहता है।
2. **अक्साई चिन रोड :** लद्दाख इलाके में यह सड़क बना कर चीन ने विवाद का एक और मसला खड़ा किया है। चीन जम्मू-कश्मीर को भारत का अंग मानने में आनाकानी करता है, लेकिन पाक के कब्जे वाले कश्मीर को पाकिस्तान का भाग मानने में उसे कोई आपत्ति नहीं है।
3. **विवादित सीमा :** दोनों देशों के बीच करीब 3000 किमी की सीमा पर कोई स्पष्टता नहीं है। चीन जान-बूझ कर सीमा विवाद हल नहीं करना चाहता। वह सीमा विवाद को समय-समय पर भारत पर दबाव बनाने के लिए उपयोग करता है।
4. **अरुणाचल प्रदेश :** चीन पूरे अरुणाचल प्रदेश पर अपना दावा जताता रहा है। अरुणाचल में एक जल विद्युत परियोजना के लिए एशिया डेवलपमेंट बैंक से लोन लेने का चीन ने जम कर विरोध किया। अरुणाचल प्रदेश को विवादित बताने के लिए चीन वहां के निवासियों को स्टेपल वीजा देता है।
5. **ब्रह्मपुत्र :** चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर कई बांध बना रहा है और उसका पानी वह नहरों के जरिये उत्तरी चीन के इलाकों में ले जाना चाहता है। भविष्य में इस मसले का बड़ा विवाद बनने की आशंकाओं को ध्यान में रख भारत इस मसले को द्विपक्षीय बातचीत में उठाता रहा है।
6. **हिंद महासागर :** चीन ने पिछले कुछ वर्षों में हिंद महासागर में अपनी गतिविधियां काफी बढ़ा दी हैं। पाकिस्तान, म्यांमार व श्रीलंका के साथ साझेदारी में परियोजनाएं शुरू कर वह भारत को घेरने की रणनीति पर काम कर रहा है।
7. **पीओके :** पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित बालटिस्तान में चीनी गतिविधियां तेज हुई हैं। पूर्व सेना प्रमुख वीके सिंह ने खुद कहा कि इन इलाकों में तीन से चार हजार चीनी कार्यरत हैं, जिनमें पीएलए के लोग भी हैं।
8. **साउथ चाइना सी :** अपनी ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रख चीन साउथ चाइना सी इलाके में अपना प्रभुत्व कायम करने की कोशिशें कर रहा है। यहां उसे वियतनाम, जापान और फिलीपींस से चुनौती मिल रही है। हाल में उसने वियतनाम की दो तेल ब्लॉक परियोजनाओं में शामिल भारतीय कंपनियों को चेतावनी दी कि वह साउथ चाइना-सी से दूर रहें।

संभावित प्रश्न

''भारत और चीन दोनों देशों के लिए नेपाल का महत्व एक दूसरे को कमजोर और अपना स्वार्थ सिद्ध करने से अधिक संबंधित मालूम पड़ता है।'' इस कथन के सन्दर्भ में भारत की सॉफ्ट पॉवर नीति में व्याप्त कमियों के कारणों और भारत के लिए नेपाल की प्रासंगिकता का मूल्यांकन कीजिये। (200 शब्द)